आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received: 20/03/2023; Published: 24/03/2023

कविता

आइए

प्रो. हूबनाथ
हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

आइए
हम सब धरती बचाएँ

जिससे कुछ लोग
बारुदों की फ़सल उगाएँ
युद्ध का खेल रचाएँ
आइए
हम सब पानी बचाएँ

कुछ अय्याशों के
पारदर्शी तरण ताल के लिए
दस्तानों पर लगे
लहू के दाग मिटाने के बाद
फ़्लश में बहाने के लिए
आइए
हम सब जंगल बचाएँ

जिसमें किया जा सके
शिकार
आदिवासियों का
और लूटी जा सके

अपार संपत्ति
जंगल के ऊपर
और जंगल के भीतर की
आइए
हम बेटियों को बचाएँ
वहशी दरिंदों के लिए
तस्वीरों के सामने
मोमबत्तियाँ जलाने के लिए
आइए
हम सब देश बचाएँ
कि फ़कीर राजा हो
और राजा फ़कीर हो सके
हम सब एक साथ मिलकर
भारत दुर्दशा पर रो सकें
आइए
हम सब लोकतंत्र बचाएँ
और अपराधियों को
जनसेवक बनने के
अवसर दें
और पाँच वर्ष में एक बार
अपनी उँगलियों पर
न मिटनेवाला
काला दाग़ लगवाएँ
बाद में
हम सब मिलकर गाएँ

सारे जहाँ से अच्छा
हिंदोस्ताँ हमारा
और सबसे आख़िर में
हम सब ख़ुद को बचाएँ
जिससे ज़रूरत पड़ने पर
कुछ तो बचा सकें!

****